शोध-सारांश

विषय- भोजपुरी संज्ञा एवं विशेषणों का रूपप्रक्रियात्मक जनित्र

हिंदी की तरह भोजपुरी भाषा में भी आठ प्रकार के शब्द-भेद देखे जा सकते हैं, जो इस प्रकार हैं- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक। रूपांतरण के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं- विकारी और अविकारी। जिन शब्दों के रूपों में लिंग, वचन और कारक के कारण विकास (परिवर्तन) होता है, उसे विकारी कहते हैं। विकारी के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द-वर्ग आते हैं। जिन शब्दों के रूपों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अविकारी कहते हैं। अविकारी के अंतर्गत क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द-वर्ग आते हैं।

भोजपुरी में मुख्यतः संज्ञा, क्रिया, विशेषण शब्द-भेदों के शब्दरूप बनते हैं। प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध 'भोजपुरी संज्ञा एवं विशेषणों का रूपप्रक्रियात्मक जनित्र' के अंतर्गत संज्ञाओं एवं विशेषणों के अलग-अलग रूपों का विश्लेषण कर इसके लिए रूपप्रक्रियात्मक जनित्र का विकास रूपसाधक रूपों (Inflectional Forms) के लिए किया गया है। इस शोध कार्य में संज्ञा एवं विशेषणों के मूल रूप में विभिन्न प्रत्यय लगाकर इनके अलग-अलग रूपों का निर्माण किया गया है।

जैसे- 1. भोजपुरी में संज्ञा- लइका: लइकवे, लइकवो, लइकवन, लइकवने, लइकवनों, लइकवा।

2. भोजपुरी में विशेषण- नीमन: नीमनका, नीमनके, नीमनको, नीमनकी, नीमनकिए, नीमनकियो, नीमनकन, नीमनकिन।

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। इसमें भोजपुरी संज्ञा और विशेषण से संबंधित स्थितियों और नियमों का वर्णनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसके अंतर्गत निम्नलिखित बातों को समाविष्ट किया गया है-

प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'भोजपुरी भाषा: परिचय एवं स्वरूप' में भोजपुरी भाषा का परिचय दिया गया है तथा इसके साथ-साथ भोजपुरी भाषा के क्षेत्र विस्तार पर भी बात की गई है। इसके साथ ही 'भोजपुरी भाषा का भौगोलिक वर्गीकरण' तथा 'भोजपुरी की बोलियाँ या विभाषाएँ' के बारे में भी बात गई है। आगे 'भोजपुरी भाषा का साहित्य' के अंतर्गत भोजपुरी भाषा की साहित्यिक पृष्ठभूमि के बारे में भी चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'संज्ञा: स्वरूप एवं प्रकार' पर चर्चा की गई है। संज्ञा के प्रकार/भेद पर भी बात की गई है तथा इसके साथ ही संज्ञा और व्याकरणिक रूप के अंतर्गत संज्ञा रूप, लिंग, वचन, कारक पर विस्तार से चर्चा की गई है। डाटाबेस का निर्माण के अंतर्गत संज्ञा_शब्द रूप टेबल और संज्ञा_रूपावली टेबल का भी निर्माण किया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत 'विशेषण: स्वरूप एवं प्रकार' पर चर्चा की गई है। इसके साथ ही विशेष्य और प्रविशेषण के बारे में भी चर्चा की गई है। विशेषण के प्रकार/भेद पर भी बात की गई है तथा इसके साथ ही विशेषण और व्याकरणिक रूप के अंतर्गत विशेषण रूप, लिंग, वचन पर विस्तार से चर्चा की गई है। डाटाबेस का निर्माण के अंतर्गत विशेषण_शब्द रूप टेबल और विशेषण_रूपावली टेबल का निर्माण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत 'डाटाबेस और टूल निर्माण' की प्रक्रिया के बारे में चर्चा की गई है। जिसमें डाटा का संग्रह कैसे किया जाता है तथा इसके साथ ही प्रोग्राम विकास कार्य के अंतर्गत फ्लोचार्ट, सी. शार्प प्रोग्राम, प्रोग्राम कोड और प्रोग्राम का आउटपुट आदि का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अतः प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का निष्कर्ष इस प्रकार है- भोजपुरी में संज्ञा के तीन रूप मिलते हैं- सामान्य या लघु रूप, गुरु रूप और अनावश्यक रूप; जैसे- डोम, डोमवा, डोमवना/डोमउवा। भोजपुरी में

बहुवचन बनाने के लिए ‘अन, वन, अवन, उवन, इयन, अइयन’ इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। डाटाबेस में मूल संज्ञा के 350 को शब्दों को लिया गया है। जिसमें मूल संज्ञा शब्द के अधिकतम सात और न्यूनतम गिने-चुने ही रूप बनते हैं। इन शब्दों के अलग-अलग रूपों के नाम इस प्रकार हैं- मूल रूप, एकवचन+ही, एकबचन+भी, बहुवचन, बहुवचन+ही, बहुवचन+भी और गुरु रूप; जैसे- लइका, लइकवे, लइकवो, लइकवन, लइकवने, लइकवनों और लइकवा।

विशेषण शब्दों के भी तीन रूप मिलते हैं- सामान्य या लघु रूप, गुरु रूप और अनावश्यक रूप; जैसे- बड़, बड़का और बड़कवा। डाटाबेस में मूल विशेषण के 80 शब्दों को लिया गया है। जिसमें मूल विशेषण शब्द के अधिकतम दस और न्यूनतम गिने-चुने ही रूप बनते हैं। इन शब्दों के अलग-अलग रूपों के नाम इस प्रकार हैं- मूल रूप, वाला 1, वाला 2, वाला+ही, वाला+भी, वाली, वाली+ही, वाली+भी, पुल्लिंग बहुवचन, स्त्रीलिंग बहुवचन और वा/या रूप; जैसे- मोट, मोटका, मोटहन, मोटके, मोटको, मोटकी, मोटकिए, मोटकियो, मोटकन और मोटकिन; लेकिन वा/या रूप में ‘होनहार’ से ‘होनहरवा’ आदि शब्दरूप बनते हैं।

अतः भोजपुरी भाषा की संरचना में हिंदी भाषा की संरचना से बहुत भिन्नता है। इसके रूपसाधन नियम हिंदी से अलग हैं। यह स्थिति व्युत्पादन नियमों में भी देखी जानी चाहिए। इसलिए रूपसाधक की तरह व्युत्पादक पर भी काम किया जा सकता है।

Research Summary

Subject- Morphological Generator of Bhojpuri Noun and Adjectives

Just like Hindi, Bhojpuri also has eight types of parts of speech, which are as mentioned- Noun, Pronoun, Adjective, Verb, Adverb, Preposition, Conjunction and Interjection. On the basis of transformation, there are two forms- Changeable and Non-changeable. In which forms the words change according to its gender, number and case. They are known as changeable. Noun, pronoun, adjective and verb are derived in changeable form. The word which does not changes as per gender, number and case, they are non-changeable. In non-changeable form come adverb, conjunction, preposition and interjection.

In Bhojpuri, mainly word forms in noun and adjective. According to the research "Morphological Generator of Bhojpuri Noun and Adjectives" the different forms of noun and adjectives have been analyzed for the development of morphological generator of inflectional forms. In this research work, the various suffixes have added with the root forms of noun and adjectives to form different words. Example-

1. Noun in Bhojpuri- लइका: लइकवे, लइकवो, लइकवन, लइकवने, लइकवनों, लइकवा।

2. Adjective in Bhojpuri- नीमन: नीमनका, नीमनके, नीमनको, नीमनकी, नीमनकिए, नीमनकियो, नीमनकन, नीमनकिन।

Qualitative research processes have been used in this research. The rules and situations of Bhojpuri noun and adjective have specified in brief.

This short research have been classified in four chapters-

In **First Chapter** "Bhojpuri Language: Introduction and its own form" the introduction of Bhojpuri has been given with its field study in brief and 'geographical classification of Bhojpuri language' and 'dialects of Bhojpuri' have also been discussed. Further 'literature of Bhojpuri language' in accordance to this the literature have been discussed.

In **Second Chapter** 'Noun: types and form' have been discussed. Discussion been taken place for the types of noun and its types as well as on the noun form gender, number and case. In order to construct a database noun word form table and noun paradigm table have been constructed.

In **Third Chapter** 'Adjective: types and form' have been discussion. Substantive and articles have also been discussed. A type of adjective has been spoken and in accordance to adjective and grammatical form, adjective form, gender and number has been discussed. In order to construct a database adjective word form table and adjective paradigm table have been constructed.

In **Fourth Chapter** the process of 'Database and Tool construction' has been mentioned. In this, how a data is being collected and programmed developed and in accordance to this the arranged form of flow chart, c-sharp programme, programme code and output of programme is given.

Noun has three types of Bhojpuri- Simple/short form, long form and extra form. Example- डोम, डोमवा, डोमवना/डोमउवा। these suffix has been used in order to plural forms in Bhojpuri 'अन, वन, अवन, उवन, इयन, अइयन' etc. 350 words of root noun have been taken in database. In which maximum seven forms and minimum few forms of root noun has been constructed. The different forms of these words are- मूल रूप, एकवचन+ही, एकवचन+भी, बहुवचन, बहुवचन+ही, बहुवचन+भी और गुरु रूप; जैसे- लइका, लइकवे, लइकवो, लइकवन, लइकवने, लइकवनों और लइकवा।

Three forms of adjective words can also be seen like- Simple/short form, long form and extra form. Example- बड़, बड़का और बड़कवा। 80 words of adjective have been taken in database. In which maximum 10 and minimum few form of root adjective has been constructed. The different form of these words are- मूल रूप, वाला 1, वाला 2, वाला+ही, वाला+भी, वाली, वाली+ही, वाली+भी, पुल्लिंग बहुवचन, स्त्रीलिंग बहुवचन और वा/या रूप; जैसे- मोट, मोटका, मोटहन, मोटके, मोटको, मोटकी, मोटकिए, मोटकियो, मोटकन और मोटकिन; वा/या रूप में 'होनहार' से 'होनहरवा'।

Therefore, there is some difference in the structure of Bhojpuri and Hindi language. The rule of inflectional form is different in Hindi. This situation can be seen in derived rules. This way work can be performed on derivational form just like inflectional form.